साइकिल पर था कव्वा

एकलव्य

Big Little Book Award Winning Author

Big Little Book Award Winning Illustrator

प्रभात

कला अतनु रॉय

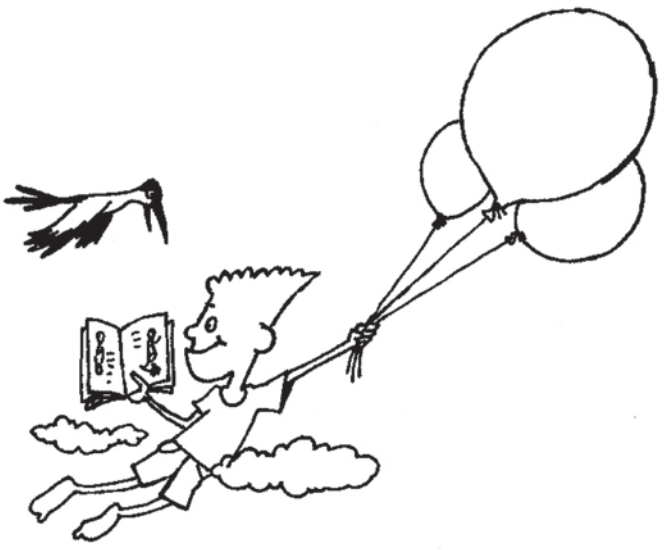

साइकिल पर था कव्वा

प्रभात
कला अतनु रॉय

एकलव्य

साइकिल पर था कव्वा बच्चों की दुनिया में कविता की एक और किताब का इस्तकबाल!

कुछ चीज़ें हैं जो इस किताब को ज़रा खास बनाती हैं। इसकी कविताएँ पाँच से दस साल के बच्चों के लिए एकदम फिट बैठेंगी। इनकी भाषा आसान है। ये घुमावदार नहीं हैं। इनके अर्थ ज़्यादातर इनके तल पर ही स्थित हैं।

संग्रह की कुछ कविताएँ इतनी सरल हैं कि वे मुश्किल से कविता होने पर राज़ी होंगी। कहीं-कहीं वे एक दोस्ताई संवाद-सी लगती हुई शुरू तो होंगी पर पूरी होते-होते कविता की मिठास भी घोल जाएँगी। प्रभात की कविताओं में यह आँख-मिचौनी और धूप-छाँव का खेल बहुत है। जैसे,

आओ भाई खिल्लू
अभी तो की थी मिल्लू
भरा नहीं क्या दिल्लू

ये तुकबन्दियाँ भाषा सीख रहे बच्चों की पलक और पनप रही भाषा को हिम्मत बँधाएँगी। वे भाषा की ज़्यादा खुली छवि प्रस्तुत कर उन्हें रियाज़ के लिए उत्साहित भी करेंगी।

इन कविताओं के विषय वही हैं जो इस उमर के बच्चों द्वारा बार-बार बरते जाते हैं। इनमें चुटकियाँ हैं और भाषाई तोड़-फोड़ भी है। भाषा को कवि ने वहाँ तक लहर जाने दिया है जहाँ तक पहुँचकर उसमें लय आती है। प्रभात राजस्थान यानी ऊँटों के देश के कवि हैं। कविताओं में उन्होंने भाषा की सवारी से वैसी ही लचक पैदा की है जैसी एक ऊँट के सवार को मिल जाती है।

इस मिज़ाज की कविताएँ यह भी बताती चलती हैं कि लिखित रहकर भाषा का पूरा नहीं पड़ता। वह ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के साथ ही अपने पूरे रंग में आती है। तो, इन कविताओं में अभिनय की तरफ जाता एक झीना-सा रास्ता भी मिलता है।

दुनिया की गुत्थी को देख-सुन-स्पर्श कर सुलझाने में मशगूल बच्चे अक्सर चीज़ों को उलट-पलटते, पटकते हैं। वे चखकर, और चीज़ों की तहें खोलकर (तोड़कर?) अनवरत उन्हें जानने में लगे होते हैं। इन कविताओं में भाषा के साथ कवि ठीक यही करता दिखाई देता है। इसीलिए शायद ये कविताएँ पूरी कविताएँ न होकर कविताओं की एक शाख जैसी हैं। कविताओं की कलम! इस मायने में कि जब ये ज़बान पर लगेंगी तो खूब फलेंगी-फूलेंगी। ये टुकड़े जितने दिखते हैं असल में वे उससे ज़्यादा फैलाव लिए हैं। इनमें सबकी ज़बान के लिए एक न एक खुलन सहेजी मिलेगी। जैसे,

चूहेएएएएएएएएएएए
किससे पूछ के खाए
तूने मेरे
पुएएएएएएएएएएएएए

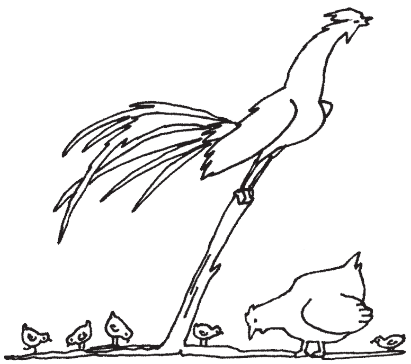

को पढ़ते हुए कभी अचानक आपको कोई दूसरा टुकड़ा याद आ सकता है -

ओ चीटेएएएएएएएएएए
क्या ले जा रहा है?
घसीटे-घसीटे एएएएएएएएएएएएए

इस संग्रह की कई कविताएँ ज़बान से हाथों में उतर जाने वाली भी हैं। हाथों के छोटे-छोटे कमालों को इन कविताओं ने अपने में पिरो रखा है, जैसे,

ताली बजी पट
गुब्बारा फूटा फट!

उम्मीद है ये कविताएँ पढ़ने-सीखने को आनन्द से भर देंगी!

सुशील शुक्ल
एकलव्य, भोपाल

कौन-कहाँ?

खिल्लू	4
पीटेना	4
बिलैया	5
ईख चीख	5
ऐ	6
छू लूँ	6
बल्लू टल्लू पल्लू	7
छनमनिया	7
आलू खा लूँ	8
हव्वा	9
तुक्का	9
टपके	10
मुलाकात	10
पक पक	11
फुस फुस फुस्स	12
नौटंकी	13
हल्लू	13
गोलमटोल	14
लट्टू	14
पट-पट खट-खट	15
फंका	16
दो शैतान	16
चीन	17
डरो नहीं	17
चकरम	18
कुतका बुतका	19

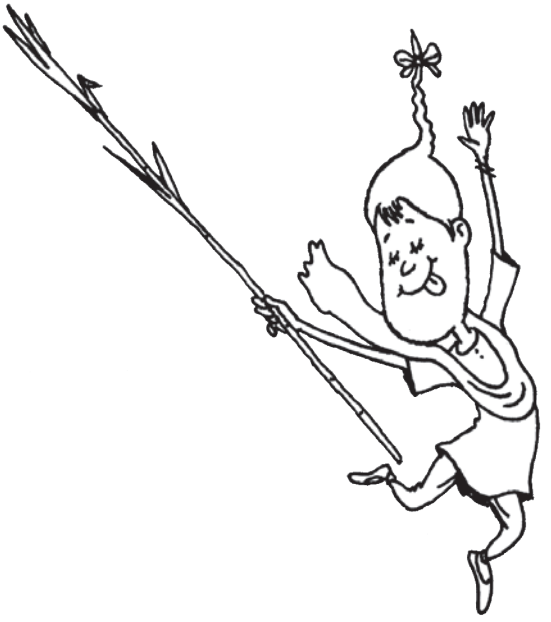

खिल्लू

आओ भाई खिल्लू
अभी तो की थी मिल्लू
भरा नहीं क्या दिल्लू

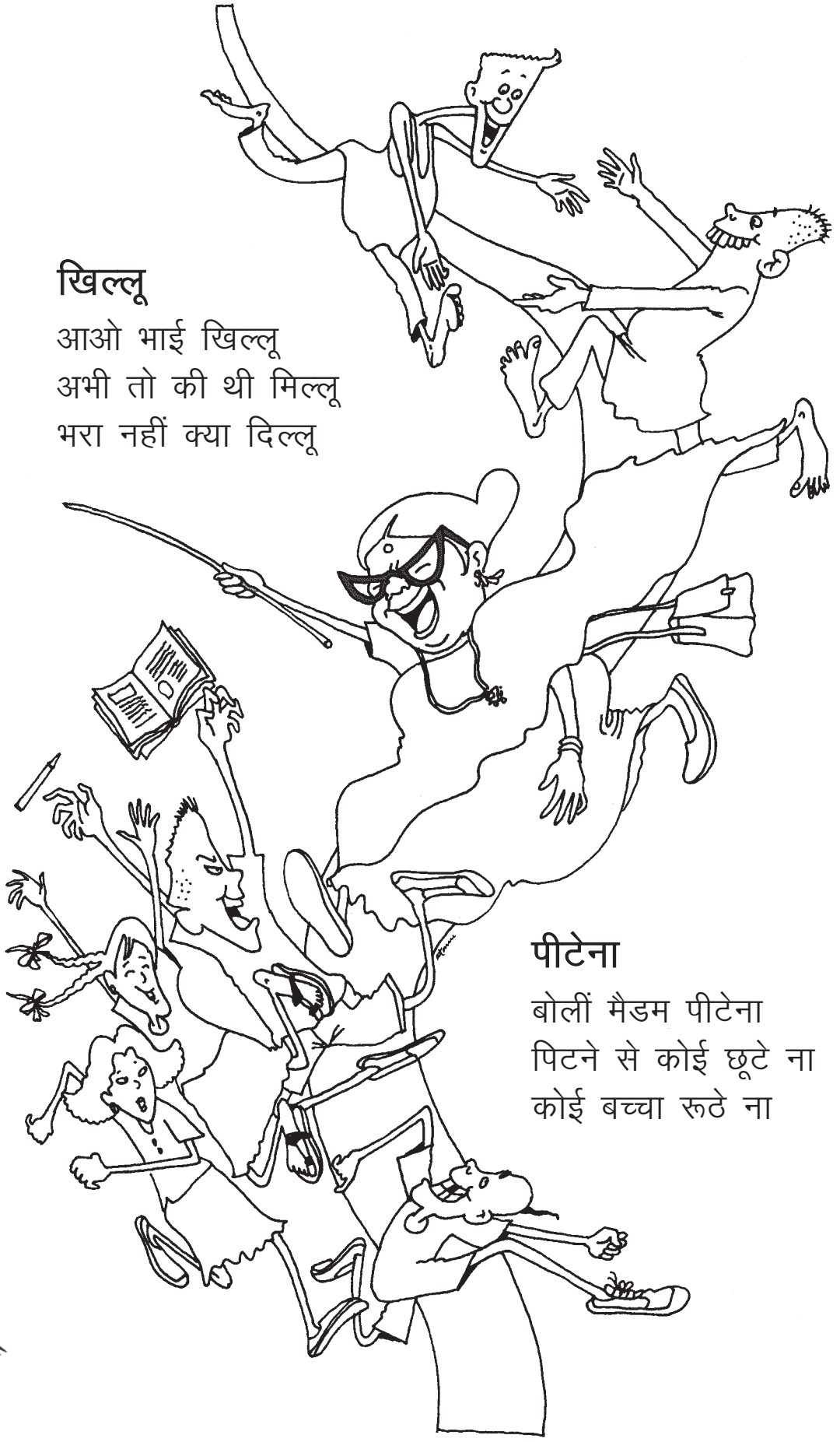

पीटेना

बोलीं मैडम पीटेना
पिटने से कोई छूटे ना
कोई बच्चा रूठे ना

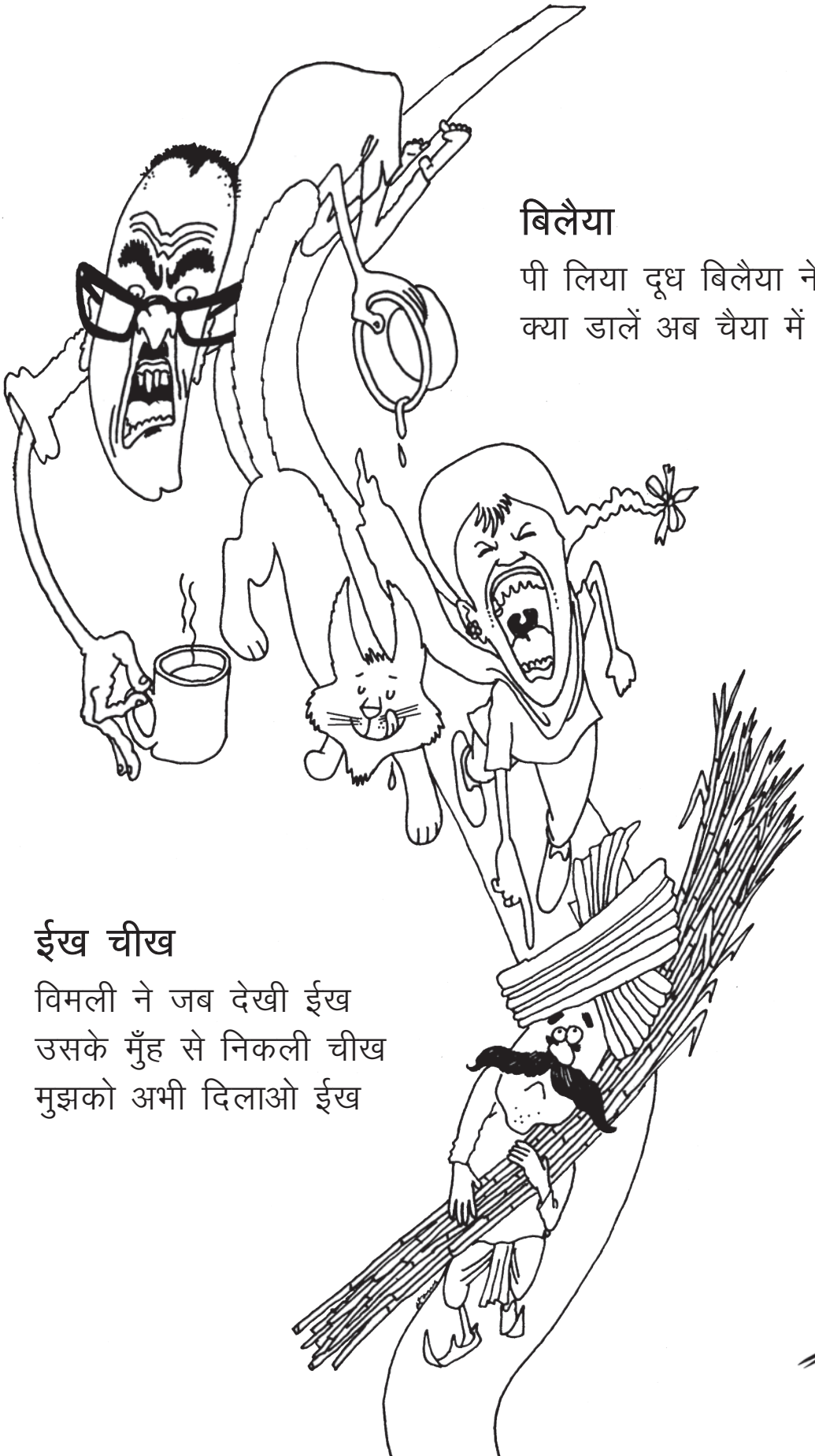

बिलैया

पी लिया दूध बिलैया ने
क्या डालें अब चैया में

ईख चीख

विमली ने जब देखी ईख
उसके मुँह से निकली चीख
मुझको अभी दिलाओ ईख

ऐ

चूहेएएएएएएएएएएएए
किससे पूछ के खाए
तूने मेरे
पूएएएएएएएएएएएएए

छू लूँ

फूल रहे थे फूलू
देख के बोला भूलू
क्या मैं तुमको छू लूँ

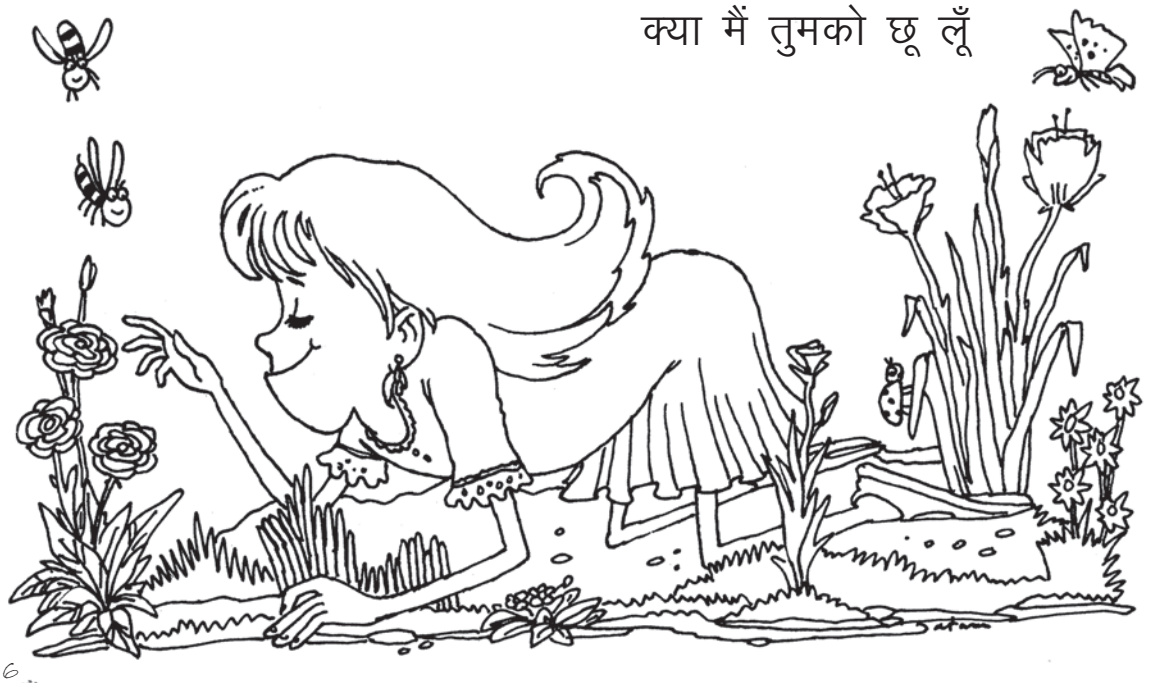

बल्लू टल्लू पल्लू

बल्लू गिर गया बल्ले से
टल्लू गिर गया टल्ले से
पल्लू किवाड़ के पल्ले से
बाकी गिर गए हल्ले से

छनमनिया

गरम दूध छनमनिया ने
ठण्डा किया छलनिया में
जो ना छने कटोरी में
जाए सीधा मोरी में

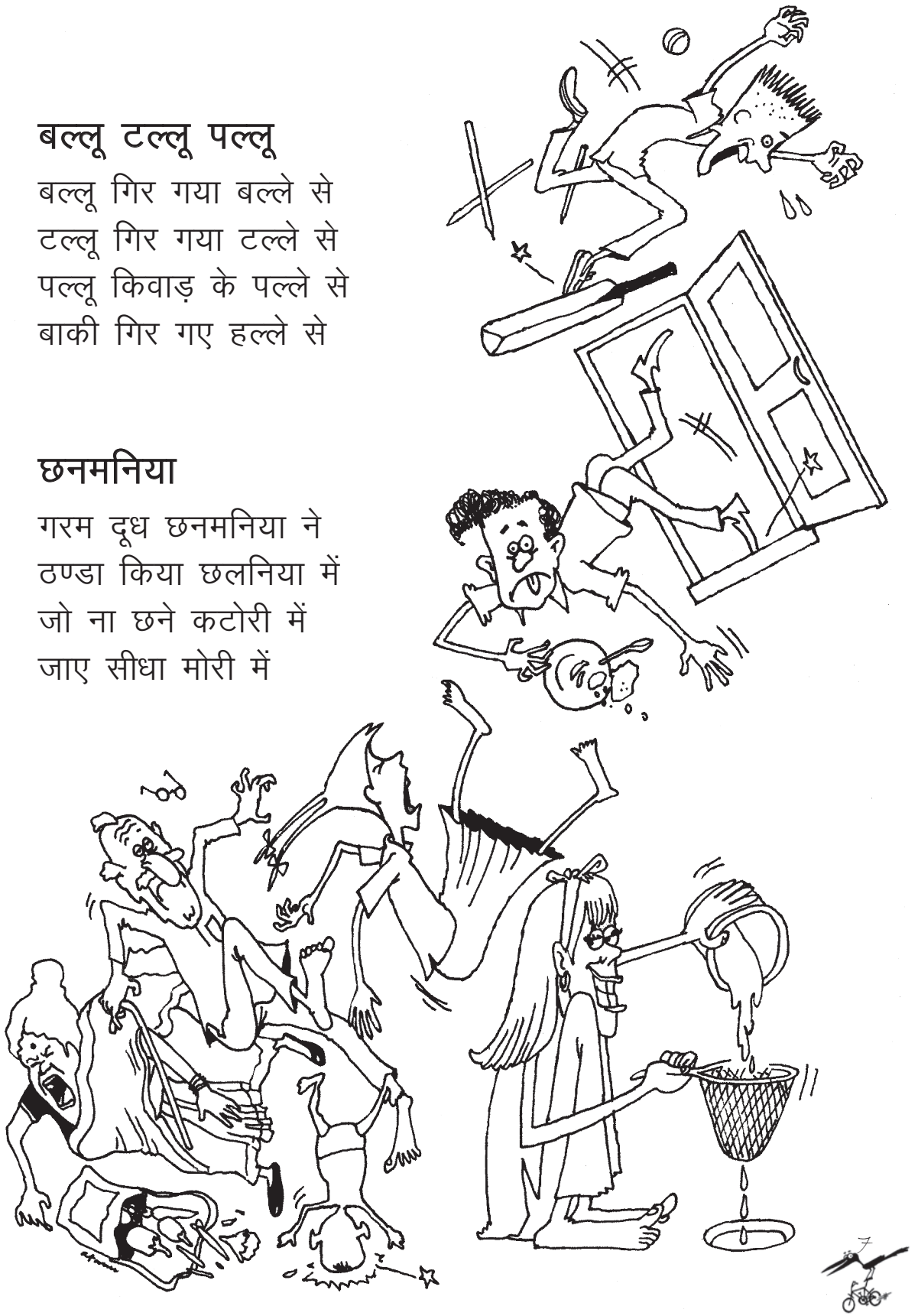

आलू खा लूँ

आओ भाई टालू
खाओ उबले आलू
काम खेत में तुमने
किया न होगा चालू

सुनकर बोला टालू
काम तो करता चालू
सोचा पहले आलू
उबल गए तो खा लूँ

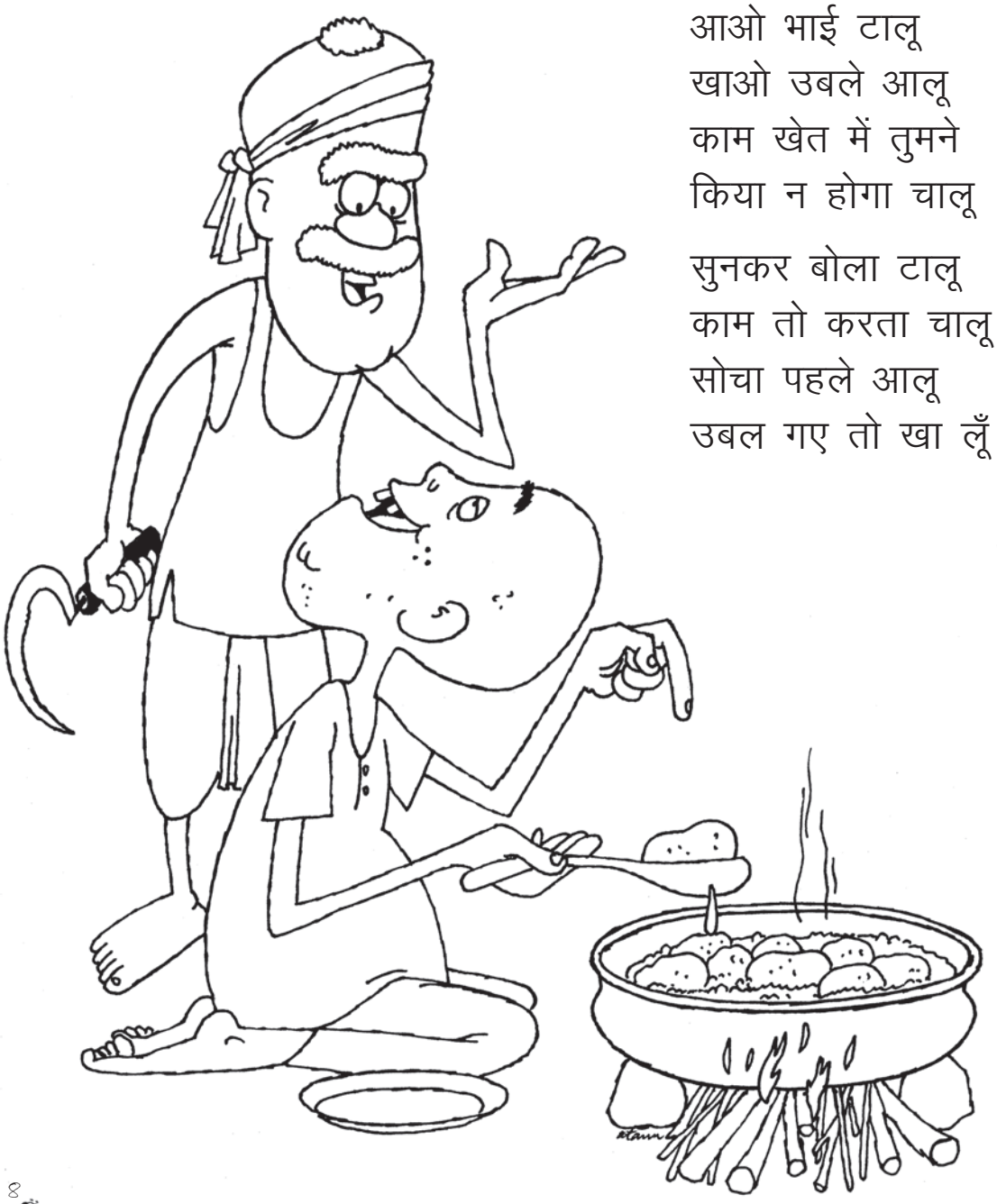

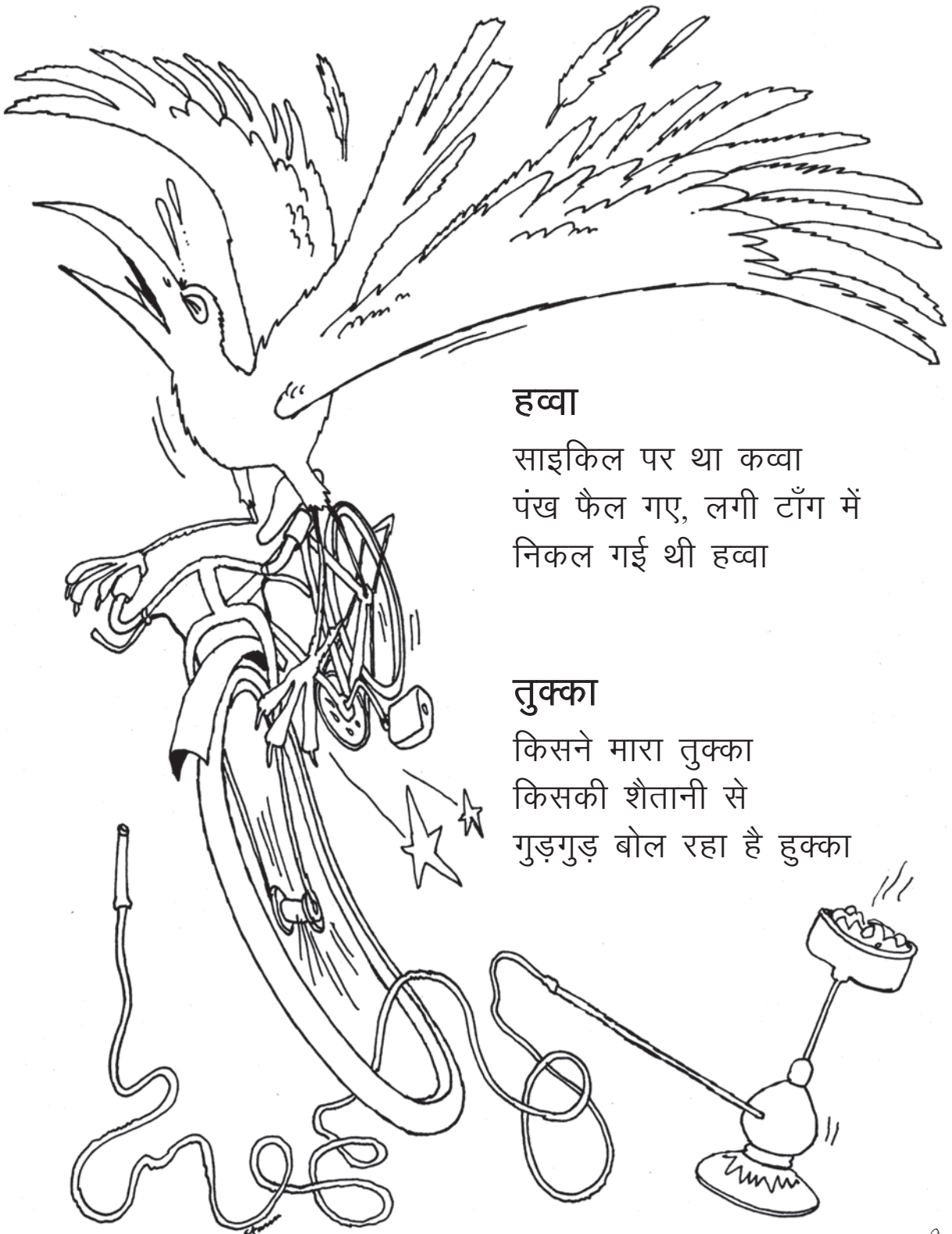

हव्वा

साइकिल पर था कव्वा
पंख फैल गए, लगी टाँग में
निकल गई थी हव्वा

तुक्का

किसने मारा तुक्का
किसकी शैतानी से
गुड़गुड़ बोल रहा है हुक्का

टपके

पौधों से टप टप
टपाटप टपके
टपक टप टम टम
टमाटर टपके

मुलाकात

मेरा नाम है हँसता सिंह

हँसना भूल जाओगे बच्चू
मेरा नाम है बस्ता सिंह

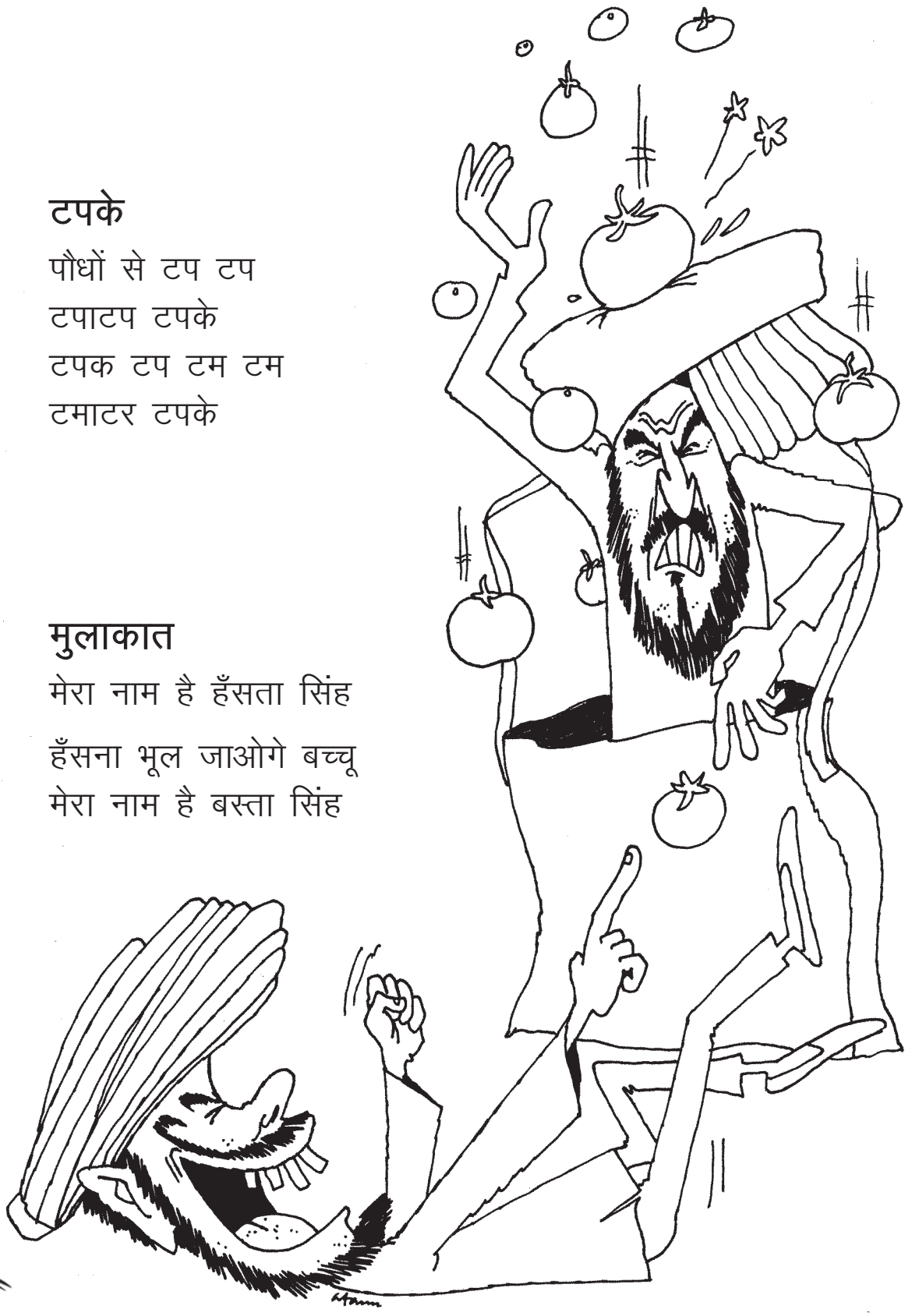

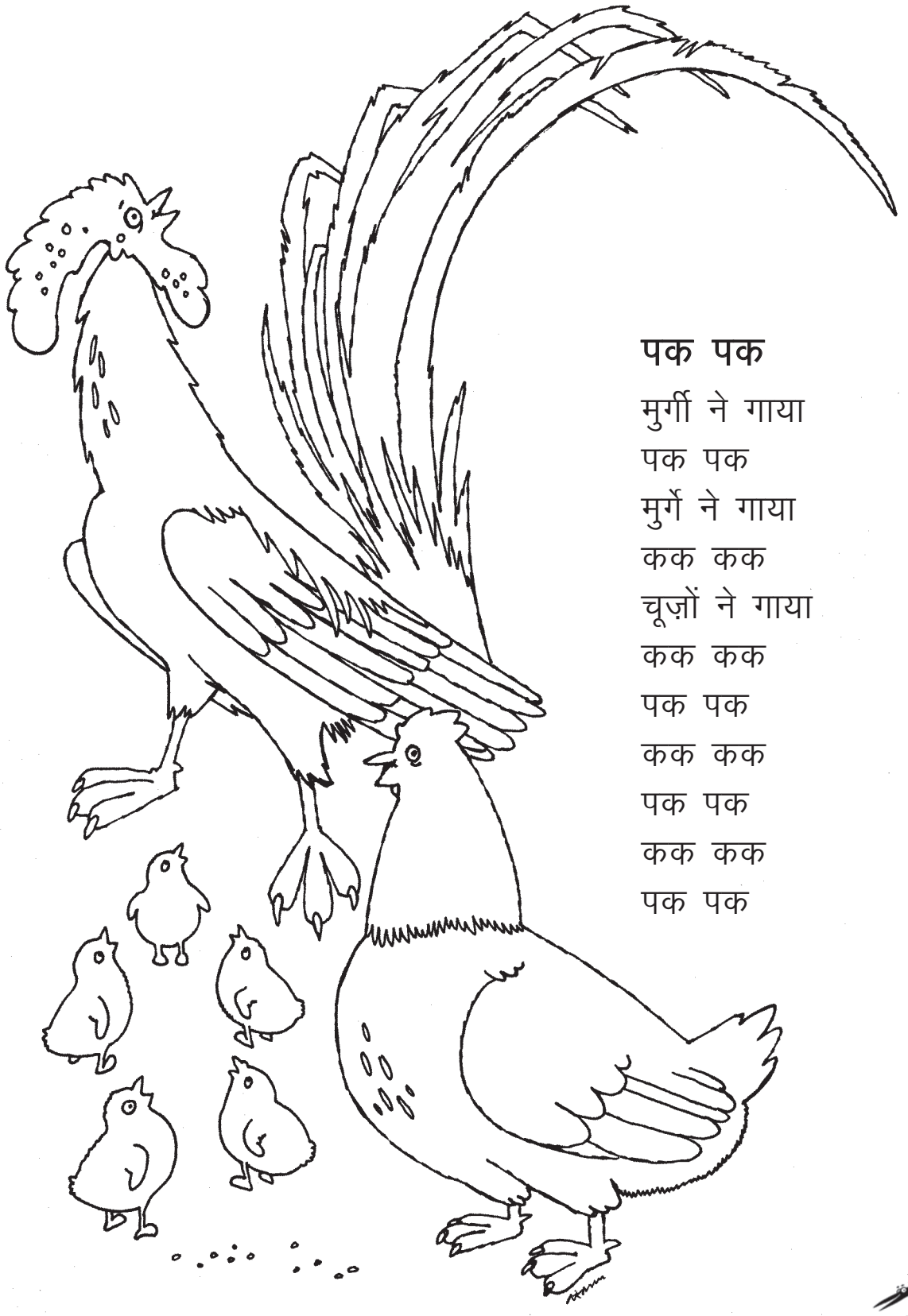

पक पक

मुर्गी ने गाया
पक पक
मुर्गे ने गाया
कक कक
चूज़ों ने गाया
कक कक
पक पक
कक कक
पक पक
कक कक
पक पक

फुस फुस फुस्स

हवा निकल गई गुब्बारे की
बोला – फुस फुस फुस

थोड़ी निकली आधी निकली
पूरी निकली फुस्स

फुस्स निकल गई गुब्बारे की
बच्चे बोले – हुस्स!

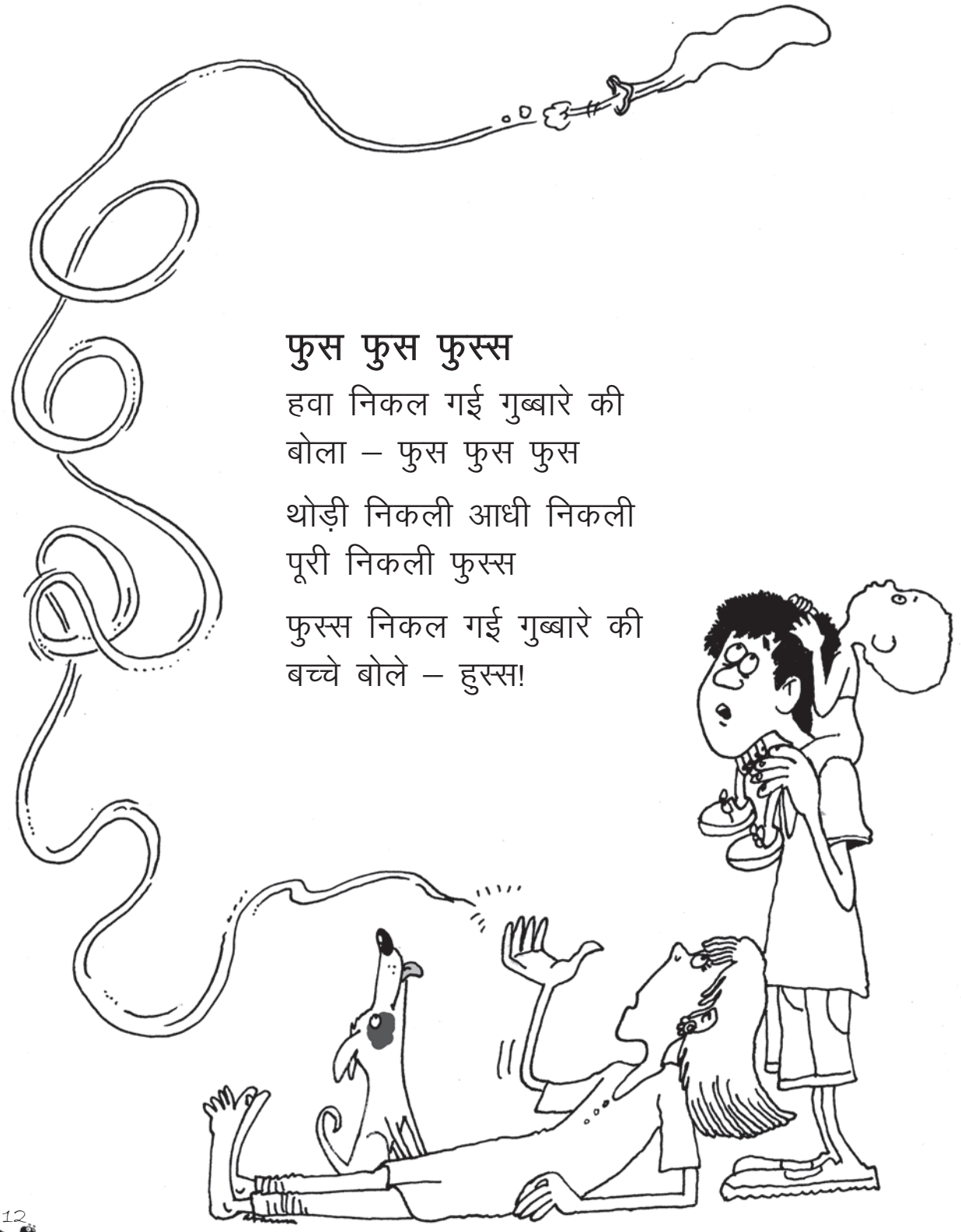

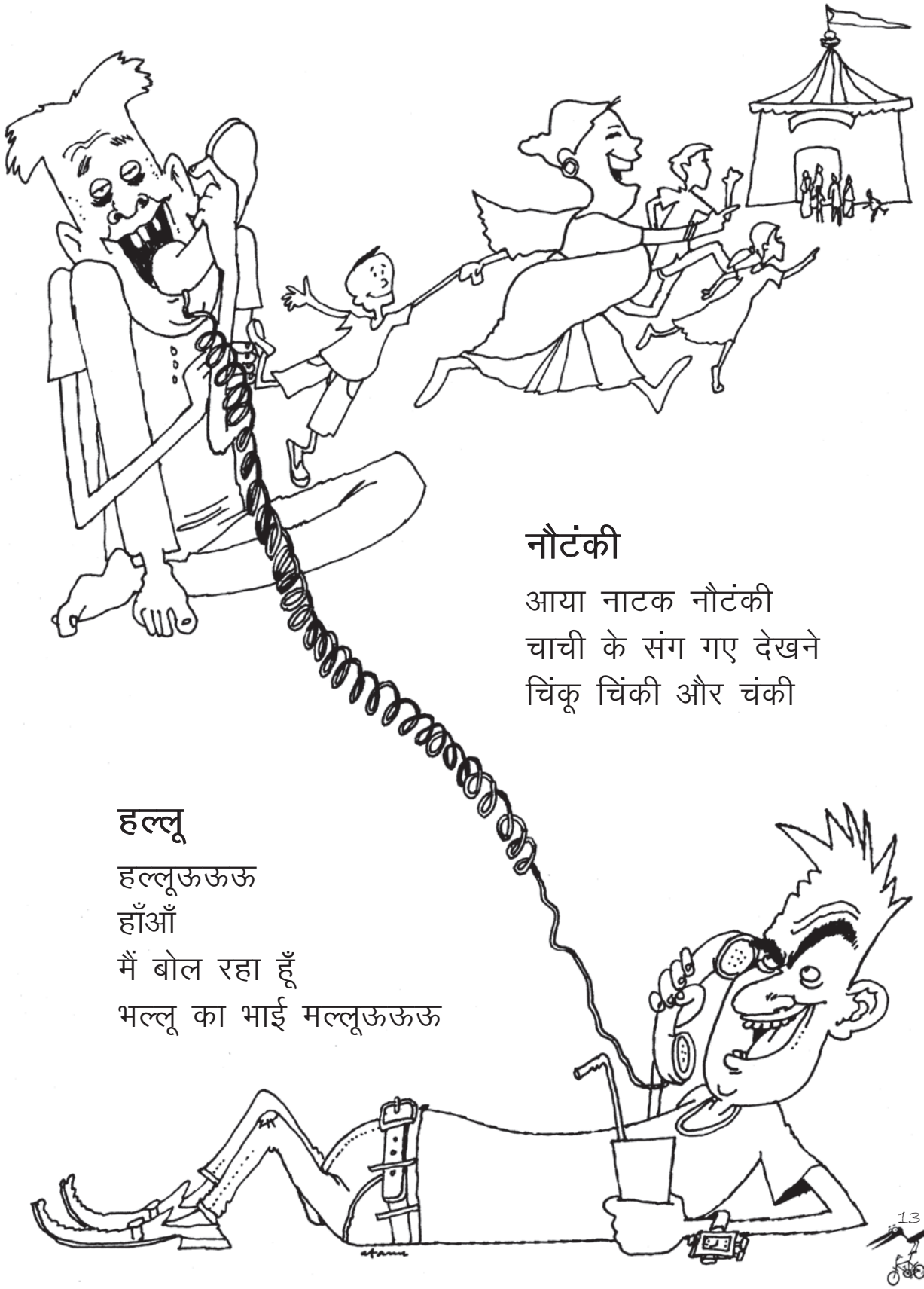

नौटंकी

आया नाटक नौटंकी
चाची के संग गए देखने
चिंकू चिंकी और चंकी

हल्लू

हल्लूऊऊऊ
हाँआँ
मैं बोल रहा हूँ
भल्लू का भाई मल्लूऊऊऊ

गोलमटोल

नाम
गोल
गाम
टोल
इलाका
गोलमटोल

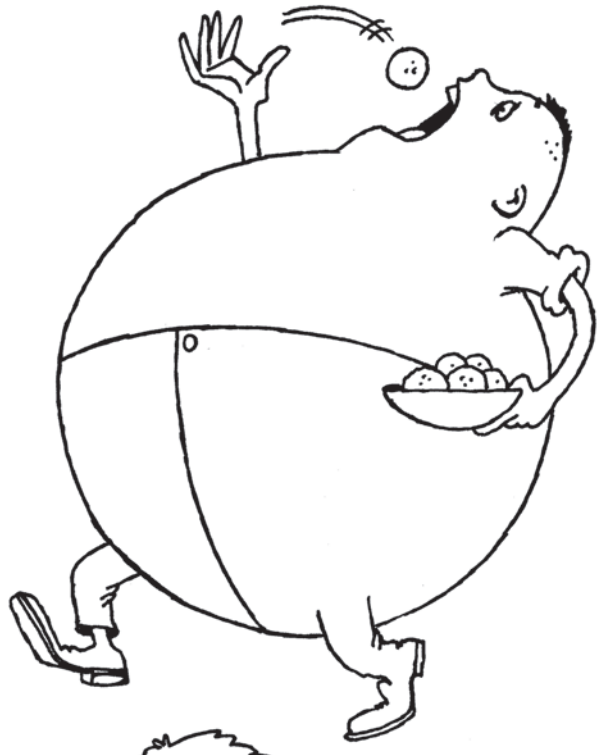

लट्टू

एक भाई मट्टू
एक भाई सट्टू
उनके घर में
दो दो लट्टू
एक चले जाए
एक जले जाए

पट-पट खट-खट

ताली बजी पट
गुब्बारा फूटा फट
दरवाज़ा खुला शट

ताली बजी पट-पट
गुब्बारे फूटे फट-फट
दरवाज़े खुले शट-शट

ताली बजी पट पट पट
गुब्बारे फूटे फट फट फट
दरवाज़े खुले शट शट शट

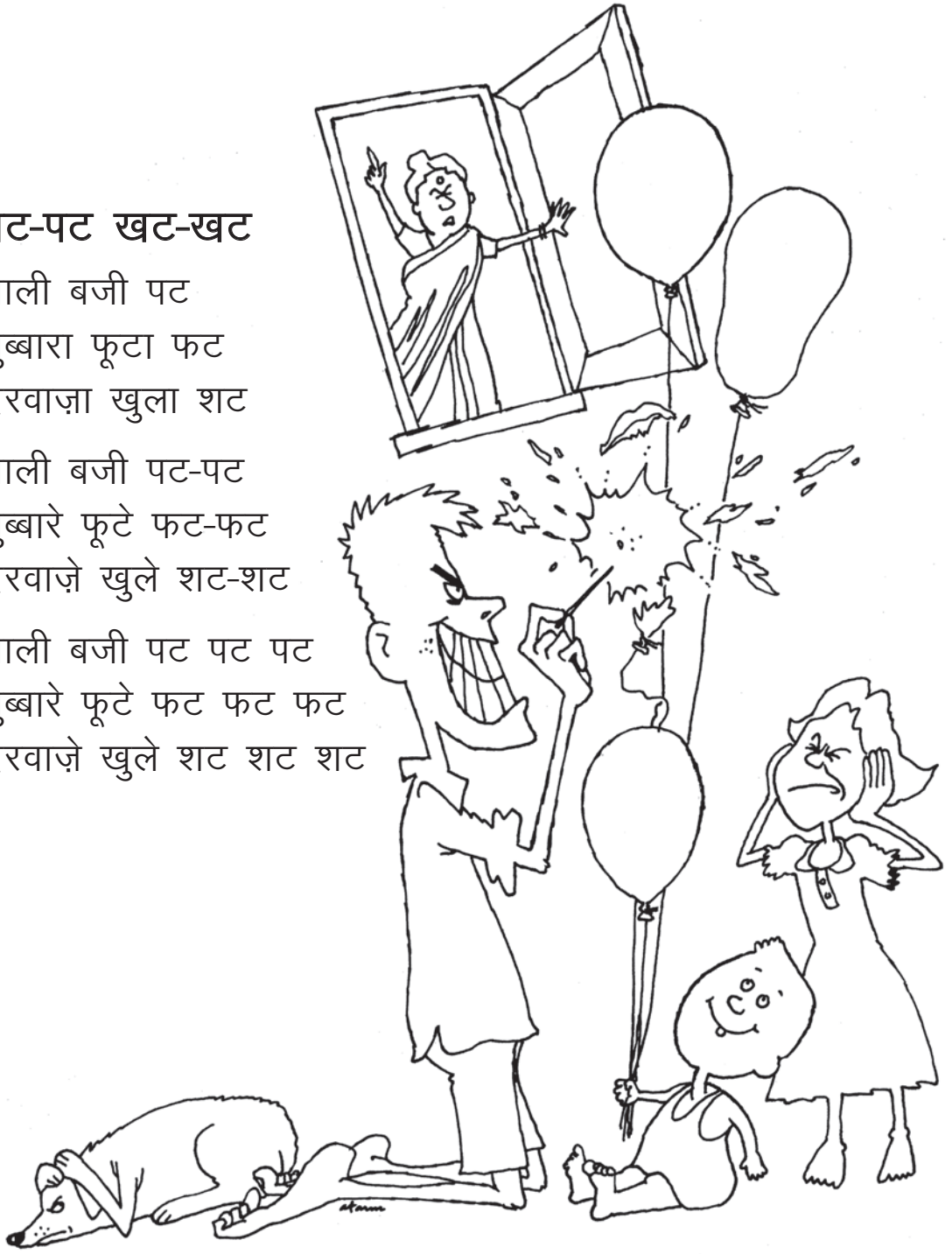

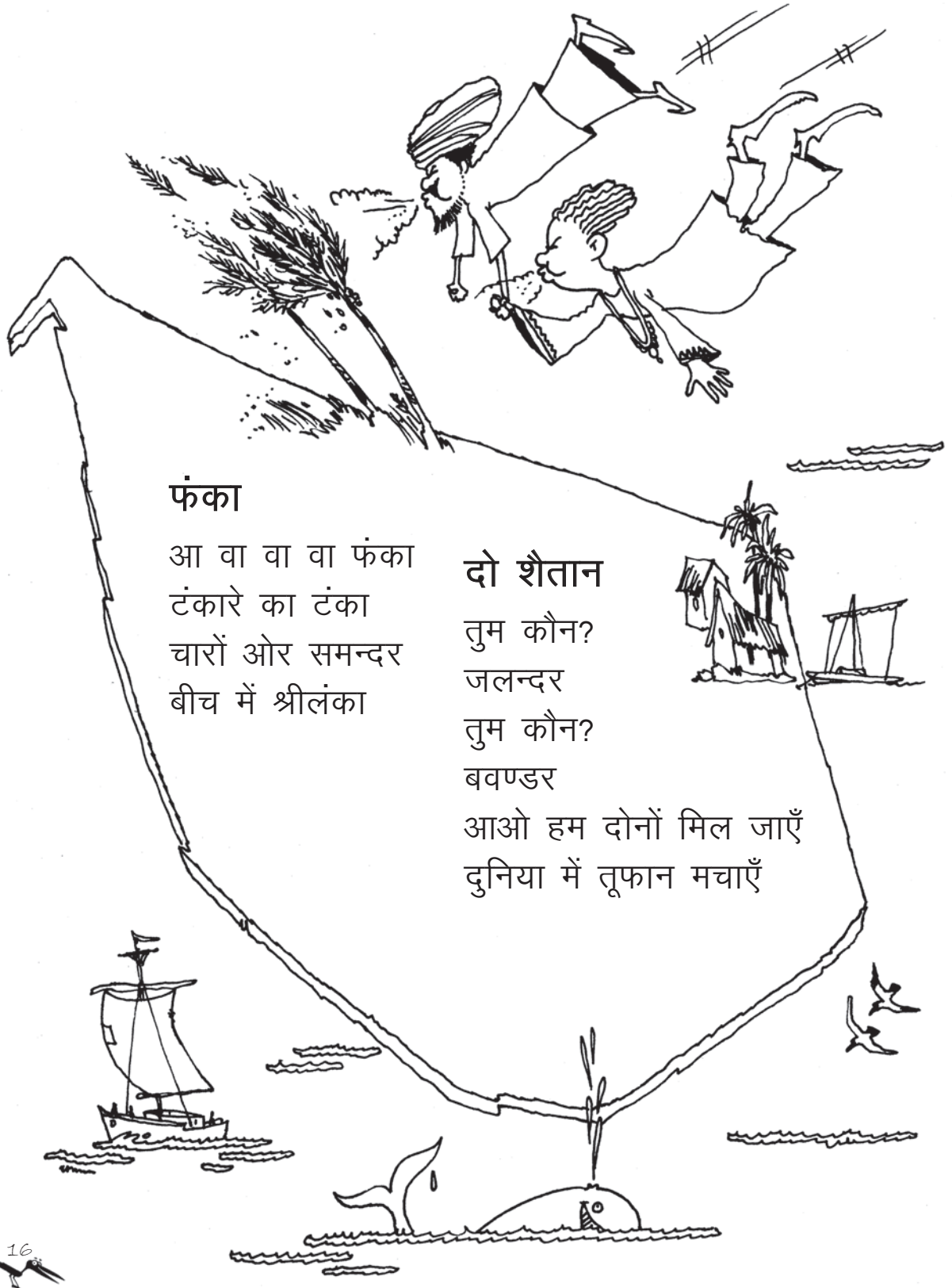

फंका

आ वा वा वा फंका
टंकारे का टंका
चारों ओर समन्दर
बीच में श्रीलंका

दो शैतान

तुम कौन?
जलन्दर
तुम कौन?
बवण्डर
आओ हम दोनों मिल जाएँ
दुनिया में तूफान मचाएँ

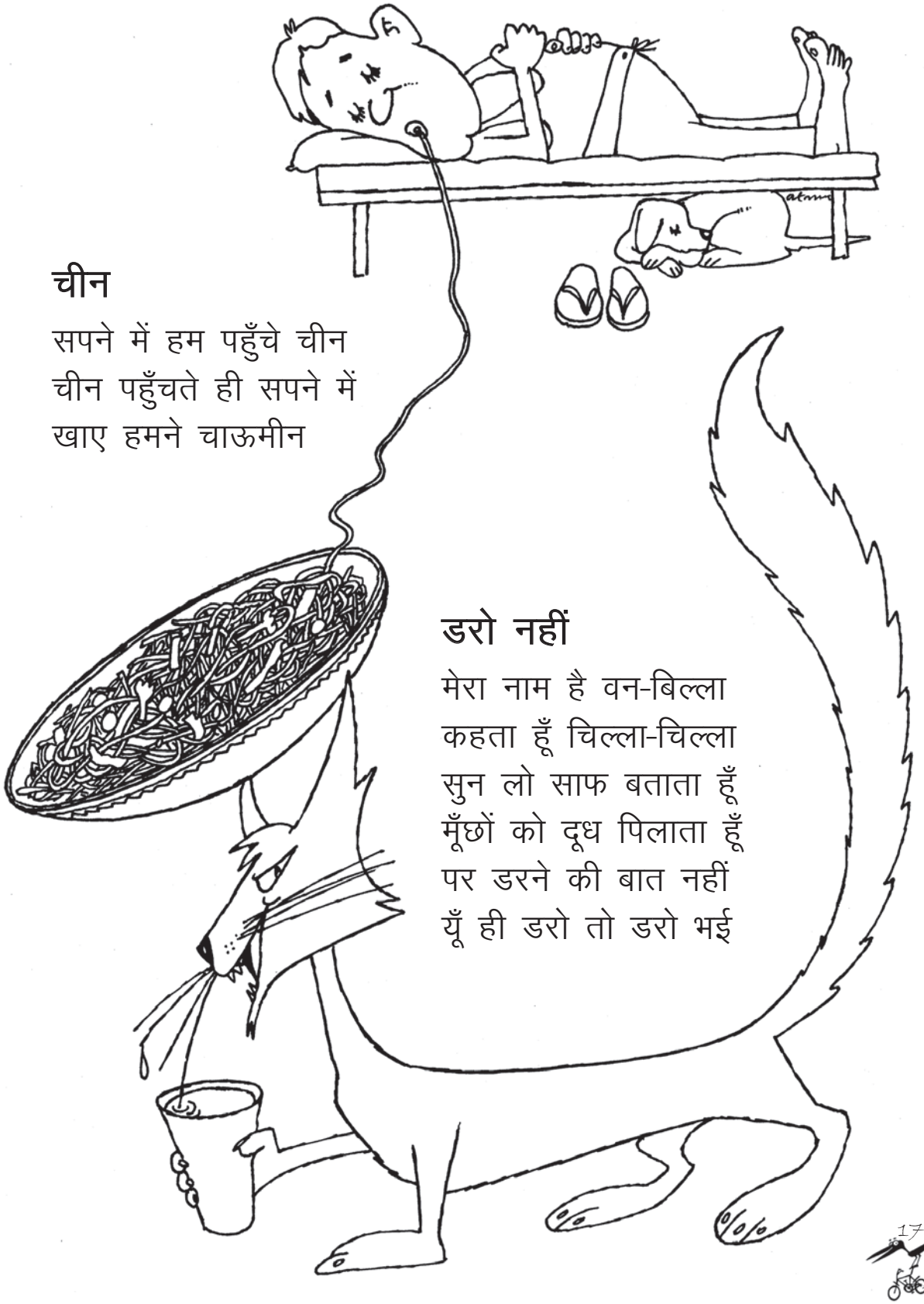

चीन

सपने में हम पहुँचे चीन
चीन पहुँचते ही सपने में
खाए हमने चाऊमीन

डरो नहीं

मेरा नाम है वन-बिल्ला
कहता हूँ चिल्ला-चिल्ला
सुन लो साफ बताता हूँ
मूँछों को दूध पिलाता हूँ
पर डरने की बात नहीं
यूँ ही डरो तो डरो भई

चकरम

एक भाई अकरम
एक भाई विकरम
तारे तकते
करते फिकरम
क्या है चकरम
कम रहती है
दूध में शकरम

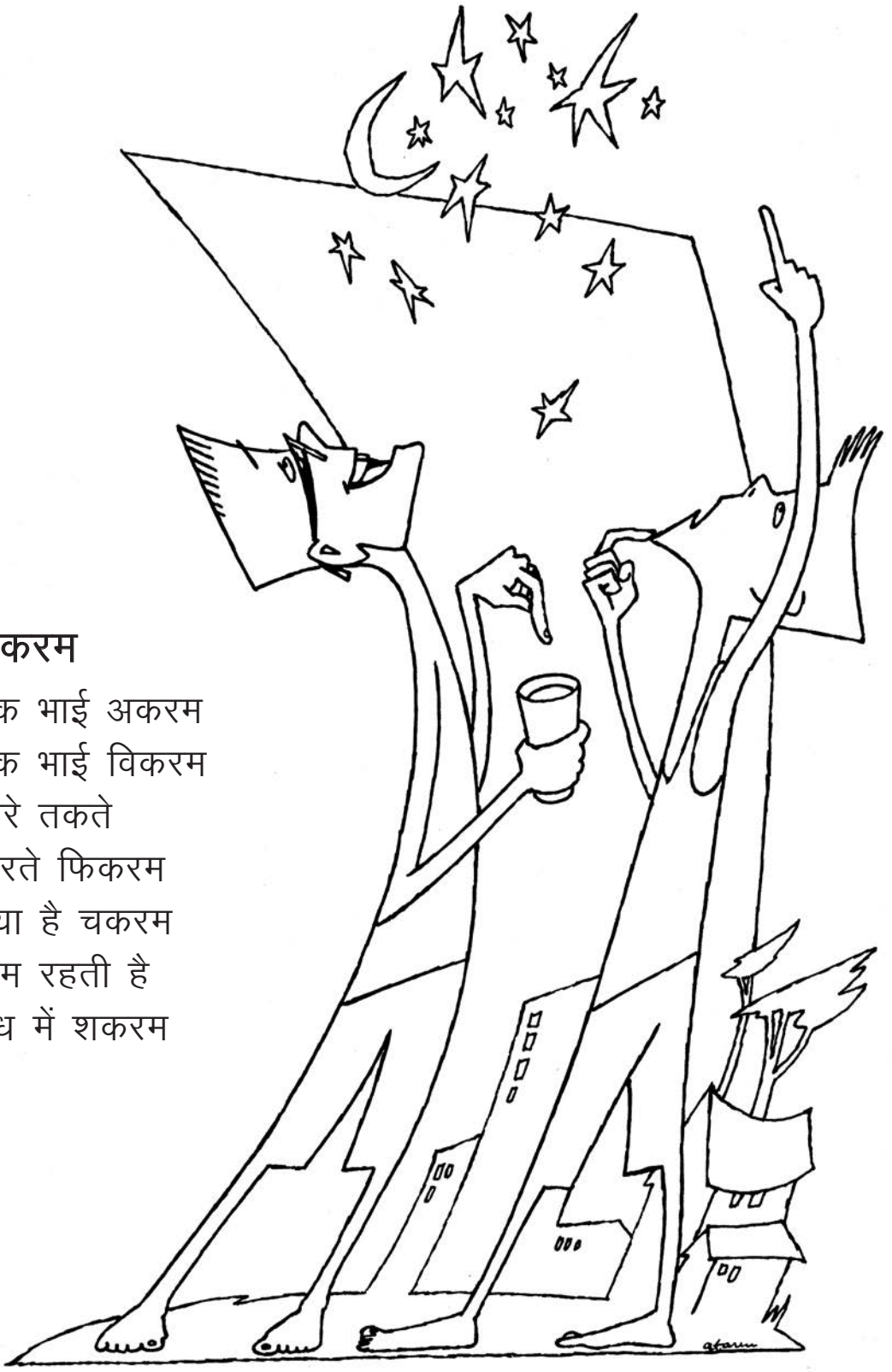

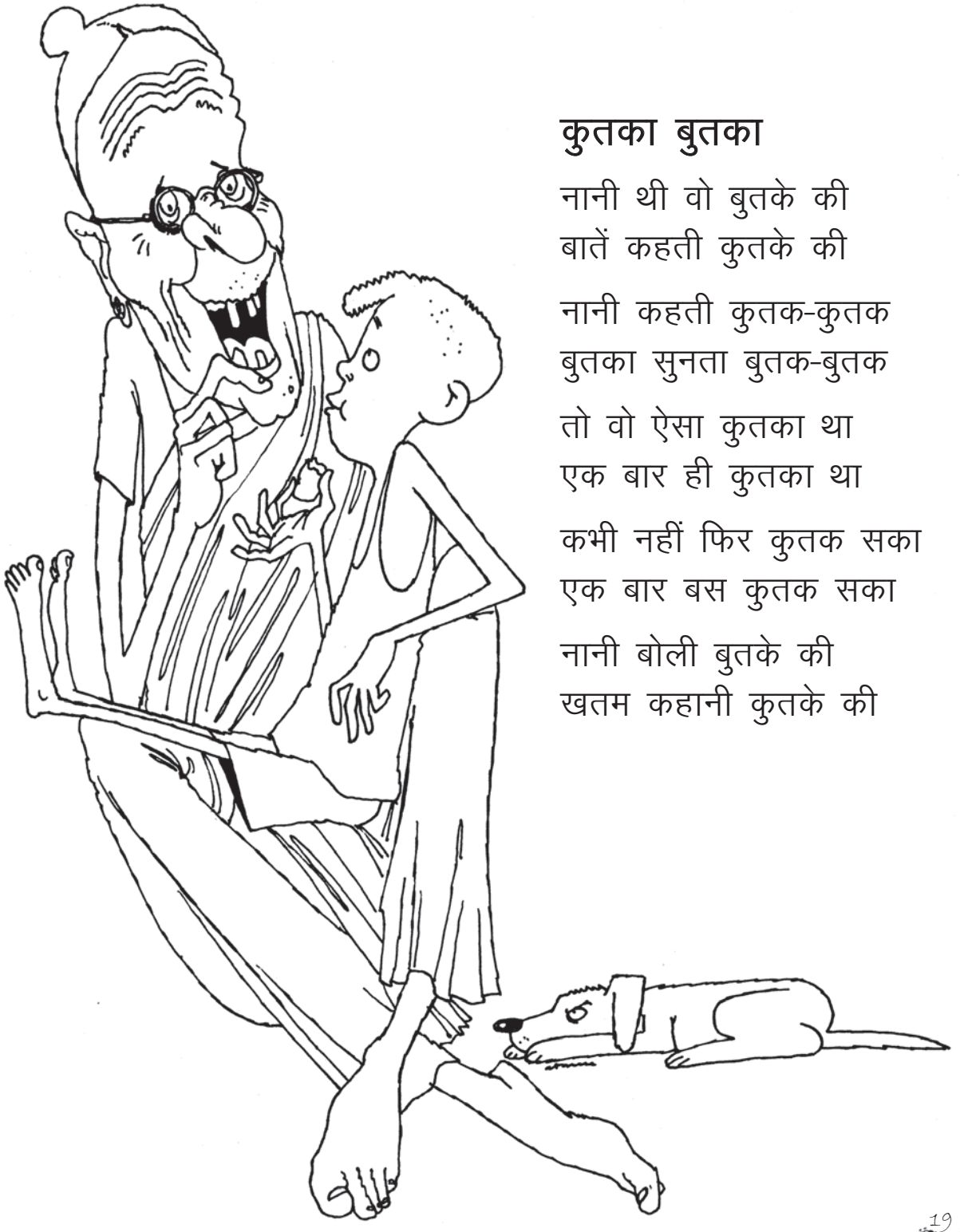

कुतका बुतका

नानी थी वो बुतके की
बातें कहती कुतके की

नानी कहती कुतक-कुतक
बुतका सुनता बुतक-बुतक

तो वो ऐसा कुतका था
एक बार ही कुतका था

कभी नहीं फिर कुतक सका
एक बार बस कुतक सका

नानी बोली बुतके की
खतम कहानी कुतके की

साइकिल पर था कव्वा

CYCLE PAR THA KAVVA

प्रभात

कला: अतनु रॉय

© प्रभात व एकलव्य
इस किताब की कविताओं का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्यों से इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें और एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य व रचनाकारों से सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: सितम्बर 2010 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: जुलाई 2012 (5000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2015 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: फरवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2019 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: फरवरी 2021 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: जुलाई 2022 (3000 प्रतियाँ)
सातवाँ पुनर्मुद्रण: मई 2023 (4000 प्रतियाँ)
आठवाँ पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2023 (5000 प्रतियाँ)
कागज़: 80 gsm मैपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-81-89976-75-0
मूल्य: ₹ 35.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोन: +91 755 268 7589

प्रभात

प्रभात हिन्दी के चर्चित कवि हैं। एक ही कविता को बच्चों-बड़ों दोनों के लिए सार्थक बनाने का तिलिस्म उन्हें आता है। बच्चों के साथ गपशप के शौकीन। सरल-सहज प्रभात शौकिया चित्रकार भी हैं। दर्जन भर किताबें प्रकाशित। फिलहाल बच्चों की पत्रिका *मारेंगे* देखते हैं। और कविता-बच्चे-सवाई माधोपुर की तिकोनी पतंग उड़ा रहे हैं।

युवा कविता समय सम्मान, 2012; सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार, 2010 और बिग लिटिल बुक अवार्ड, 2019।

अतनु रॉय

अतनु ने 1968 में दिल्ली कला महाविद्यालय में मेरिट छात्रवृत्ति के साथ प्रवेश पाने के साथ ही काम करना भी शुरू कर दिया था। कॉर्पोरेट और प्रकाशन दोनों ही क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कामों का लम्बा अनुभव है। प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशकों के साथ बच्चों और युवाओं के लिए लगभग 150 पिक्चर बुक्स पर काम कर चुके हैं। अतनु के काम की बारीकियाँ व निहितार्थ पाठक की दिलचस्पी को देर तक बाँधे रखते हैं।

किताबों के चित्रण के लिए टाटा ट्रस्ट के बिग लिटिल बुक अवार्ड समेत अन्य पुरस्कारों से नवाज़े जा चुके हैं। इसके अलावा अपने सहज कार्टूनों के लिए भी पुरस्कृत हो चुके हैं।

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई सालों से शिक्षा व जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं, जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें और पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ सालों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स)) और *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित व प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, नर्मदापुरम, पिपरिया, शाहपुर (बैतूल) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

सम्पर्क: **एकलव्य फाउंडेशन** फॉर्च्यून कस्तूरी के पास जाटखेड़ी, भोपाल-462 026 (मप्र)
books@eklavya.in

कौआ कभी साइकिल चलाता है? नहीं न?

कविताएँ हमें आज़ादी देती हैं – अपने मन के हिसाब से चीज़ों को देखने की, कहने की। इस संग्रह की कविताओं में शब्दों को तोड़-मरोड़कर, उन्हें कसकर और खुला छोड़कर ऐसा बनाया गया है कि वे तुम्हारी जुबाँ पे आकर खूब ठुमकेंगे-खनकेंगे। और तुम्हारे मन को नया देखने, सुनने, करने की आज़ादी देंगे।

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS
एकलव्य

मूल्य: ₹ 35.00

9 788189 976750